SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

Nk;kokn dk; e ukjh Lokèkhurk

dey pkèkjh] (Ph.D.), हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
dey pkèkjh] (Ph.D.), हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/03/2023
Revised on : -----
Accepted on : 23/03/2023
Plagiarism : 01% on 16/03/2023

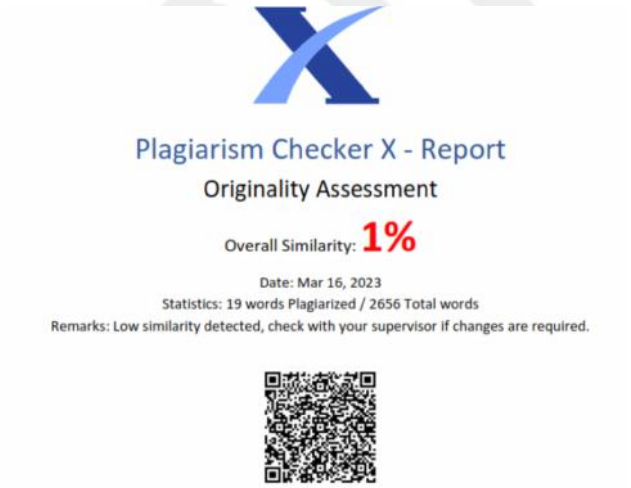

'kks/k lkj

स्वानुभूति, कल्पना, प्रकृति के मानवीकरण, आध्यात्मिक छाया, मूर्तिमत्ता, लाक्षणिक विचित्रता आदि विशेषताओं को संजोये हुए तथा समकालीन सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति छाया रूप में करते हुए छायावाद ने स्वाधीनता–संग्राम की खुशबू को अपनी कविताओं में स्वर दे दिया। राष्ट्रीय जागरण के आन्दोलनों में स्त्री स्वाधीनता के स्वर समाये हुए थे। ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि छायावाद के पूर्ववर्ती काव्यों में नारी–सम्बन्धी रचनायें नहीं थीं परन्तु उनमें सम्मान के स्थान पर दया की भावना थी। पर कालान्तर में नारी शिक्षा, सुधार आंदोलनों से स्वयं लड़कियों में स्त्री स्वाधीनता की जो भावना उत्पन्न हुई भला काव्य में जागरण का एहसास दिलाती स्वछंदता की प्रहरी छायावादी कवितायेँ इनमें कहाँ पीछे रहतीं।

e[; 'kCn

Nk;kokn] L=h Lokr«;] L=h foe'k] jk"Vªh; tkxj.k] LoNnrkokn-

साहित्य मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की वाणी है। अविभक्त जीवन की इकाई का प्रतिबिंब है फिर छायावाद तो अपनी छाया के लिए प्रसिद्ध ही है। इसके नाम से ही प्रकट है कि इसमें समकालीन सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति छाया रूप में हुई है।

वह केवल जीवन के वन में
छाया एक पड़ी।

व्यक्तित्व की स्वाधीनता, प्रकृति का साहचर्य और स्वतंत्र नारी की शक्ति का सहयोग पाकर आधुनिक पुरूष व्यापक सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगा। जीवन के जिस ओर से उसे विषमता, पराधीनता और अन्याय दिखाई पड़ा, वहीं उसने संघर्ष

आरम्भ कर दिया। इस व्यापक जागरण का प्रभाव छायावाद की कविता पर भी पड़ा। उन्नीसवीं सदी में जो सुधार आन्दोलन आरम्भ हुआ था वह बीसवीं सदी तक बहुत जोर पकड़ने लगा। इस बीच नारी–शिक्षा में बड़ी तेजी से प्रगति हुई।

सामाजिक जीवन के साथ ही स्त्रियों ने इस युग में राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। कांग्रेस के आंदोलन में स्त्रियों का भी काफी सहयोग रहा है। उन्होंने सार्वजनिक सभाओं में भाग लिया मंच से ओजस्वी भाषण दिए। वे जुलूसों में निकली और उन्होंने लाठियों का वार झेला तथा अंत में वे जेल भी गई। इस तरह वे घर से बाहर आई और बाहर आकर उन्होंने अपनी शक्ति का परिचय दिया।

इन सभी बातों का असर कविता पर भी पड़ा। नारी के प्रति पहले जो दया का भाव था वह बदल गया। इस युग में नारी ने पुरूष की दया के स्थान पर अपने अधिकारों की माँग की। इस अधिकार भावना से नारी पुरूष के बीच समानता का भाव पैदा हुआ। पुरूष को भी नारी की मुक्ति में अपनी मुक्ति का द्वार दिखाई देने लगा। कुल मिलाकर भिखारिणी अब मानसिक रूप से स्वामिनी बनी। सम्पूर्ण छायावादी काव्य नारी स्वतन्त्रता का पक्षधर रहा है। छायावाद के पूर्ववर्ती काव्य में भी नारी–सम्बन्धी रचनाएँ लिखी गई, किन्तु वे रचनाएँ पुरूष प्रधानता का ही द्योतक है। द्विवेदी युग की कविता में नारी के प्रति दया का भाव तो है पर यथोचित सम्मान का भाव नहीं है। उस युग में निःसंदेह विधवाओं को लेकर अनेक कविताएँ लिखी गई लेकिन उन कविताओं में विधवा को खाना–कपड़ा दिलाने का ही आग्रह अधिक है और इसीलिए विधवा–विवाह को आवश्यक ठहराया गया है। द्विवेदी युग का यह काव्य एक प्रकार से अनाथालय प्रतीत होता है जिसमें नारी को आश्रय देने के साथ ही वंदिनी भी बना दिया गया और इस तरह वह अपने सहज जीवन से विच्छिन्न कर दी गई। यदि 'विधवा' सम्बन्धी द्विवेदी युग और छायावादी युग की दो कविताएँ अथवा कहानियाँ ले ली जाएँ तो दोनों युगों का अंतर साफ हो जाएगा।

नारी की स्वाधीनता को छायावादी कवियों ने विशेष महत्त्व दिया। नारी को मानवी के रूप में सर्वप्रथम छायावादी काव्य में प्रतिष्ठा मिली। छायावादी कवियों के स्वातंत्र्य–भाव और स्वच्छंद–दृष्टि ने सामंती बंधनों में जकड़ी नारी को मुक्ति दिलाकर उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया। आधुनिक युग के प्रजातांत्रिक विचारों से प्रेरित छायावादी कवियों ने नारी विषयक संकीर्ण मान्यताओं का विरोध करते हुए उसके प्रेयसी रूप को ही नहीं बल्कि पत्नी जननी, सहचरी आदि रूपों में उसके सामाजिक महत्त्व को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया। काव्य ही नहीं निराला और महादेवी वर्मा ने समाज में नारी की अवस्था और मुक्ति को लेकर अनेक निबंध एवं कहानियाँ रचकर नारी की स्वतंत्रता को वाणी दी। राष्ट्र के विकास में भारतीय समाज के आधे भाग की हिस्सेदारी नहीं के बराबर हो। वह रूढ़ियों और अंधविश्वासों में जकड़ी रहे निराला इस बात के विरोधी थे। नारी को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त हो, सामाजिक कार्यों में उसकी भी भूमिका हो, वह भी पढ़–लिखकर देश के राजनैतिक और सांस्कृतिक कार्यो में हिस्सा ले निराला और महादेवी जी ने इन बातों पर अपने लेखन में विशेष रूप से बल दिया (सुधा, दिसम्बर 1932)। ई– की सम्पादकीय टिप्पणी में नारी की स्वाधीनता की चर्चा करते हुए निराला ने लिखा– ''महिलाओं की स्वतंत्रता ही उनके जीवन की सब दिशाओं का विकास करेगी। हमें सिर्फ अपनी महिलाओं की स्वतंत्रता का स्वरूप बदलना है और यह भी सत्य है कि पुरूषों के निरादर करने पर भी स्त्री–शक्ति का विकास रूक नहीं सकता, न वह अब तक कहीं रुका है। चूंकि पुरूष निराधार स्त्रियों की उपेक्षा करने में इस देश में अधिक समर्थ है इसलिए हम स़्त्री–स्वतंत्रता के कार्य में पुरूषों से मदद करने के लिए कहते हैं क्योंकि नारी ही भावी राष्ट्र की माता है। मूर्ख, पीड़ित और पराधीन माता से तेजस्वी स्वतंत्र और मेधावी बालक–बालिकाएँ नहीं पैदा हो सकती, जिससे राष्ट्र का सर्वांश जर्जर हो जाता है।'[2]

महादेवी ने नारी की स्वाधीनता को अपने काव्य में स्वर दिया। निराला ने तो अपने काव्य के आरम्भिक चरण में ही 'विधवा' शीर्षक कविता में सामंती मूल्यों का अभिशाप होने वाली नारी का चित्रण किया है। कवि के शब्दों में यह भारत की विधवा स्त्री का मार्मिक चित्र है– जो दुनिया की नजरो से अपने को बचाकर भीतर ही भीतर अस्फुट स्वरों में रोती रहती हैः

''वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा–सी
वह दीप – शिखा–सी शांत भाव में लीन।
वह क्रूर काल – ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।''[3]

अनामिका संग्रह की 'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने निम्न वर्ग की मजदूर स्त्री का जो चित्रण किया है वह नारी की सामाजिक दुर्वस्था पर करारा व्यंग्य है। कवि की दृष्टि एक और उसके कोमल मांसल–सौन्दर्य पर जाती है तो साथ ही उसके श्रमशील व्यक्तित्व और सामाजिक विषमता पर भी गई है:

''कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन
गुरू हथौड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू–मलिका अट्टालिका आकार।''[4]

एक तरफ खुले आसमान के नीचे धूप में गुरू हथौड़े से बार–बार प्रहार करती मजदूरनी है तो दूसरी और तरूमालिकाओं से आवेष्ठित बडी–बडी अट्टालिकाएँ। सामाजिक विषमता का जो विरोधाभास कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है उसमें नारी के प्रति सहानुभूति से प्रेरित यथार्थ चिंतन है। निराला ने अपने काव्य में नारी के विविध रूप प्रस्तुत करके नारी की स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति दी है। तुलसीदास काव्य में 'रत्नावली' का तेजस्वी व्यक्तित्व। राम की शक्ति पूजा में 'जानकी' का प्रेरणादायी रूप नारी जाति के गौरव एवं स्वातंत्र्य–भाव का बोध करवाता है। 'बहू', 'प्रेयसी', 'वे किसान की नई बहू की आँखे' जैसी कविताओं में निराला ने समाज में नारी विषयक समस्याओं के विविध पक्षों पर यथार्थ– दृष्टि से विचार किया है।

पंत जी के काव्य में नारी के प्रति भावुक जिज्ञासा आरम्भिक रचनाओं में दिखाई पड़ती है जिसमें नारी के प्रति कवि का सहज आकर्षण एवं सम्मान–भाव लक्षित होता है। 'पल्लव' की 'छाया' कविता प्रकृति का ही चित्रण नहीं है बल्कि सामाजिक बंधनों में जकड़ी नारी की दशा का यथार्थ चित्र ही अधिक है। 'दमयंती' की कल्पना में कवि की दृष्टि उपेक्षा की शिकार नारी के कारूणिक रूप पर ही अधिक है:

''कहो। कौन हो दमयंती सी
तुम तरू के नीचे सोई?
हाय! तुम्हे भी त्याग गया क्या
अलि! नल सा निष्ठुर कोई!''[5]

कवि ने 'आँसू' की बालिका के प्रति जिस प्रेम का चित्रण किया है। वह छायावादी कवि के आदर्श भावों से प्रेरित भाव–बोध का परिचायक है। नारी के सहचार्य में 'पावन गंगा स्नान' की कल्पना और उसे देवी माँ सहचरि! प्राण! जैसे विशेषणों से सम्बोधित करके पंत जी ने नारी विषयक सामंती–संस्कारों और संकीर्णताओं को तोड़ा और उसे पुरूष के समकक्ष महत्त्व दिया। पंत जी के काव्य में नारी की स्वाधीनता का भाव प्रगतिवादी दौर की 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' की कविताओं में और अधिक प्रखर रूप में व्यक्त हुआ है। 'युगवाणी' की 'नारी' कविता में सामंती बंधनों से नारी को मुक्त करने का आह्वान कवि ने इन शब्दों में किया है:

''मुक्त करो नारी को मानव!
चिर बंदिनी नारी को
युग–युग की बर्बर कारा से
जननी, सखी, प्यारी को।''[6]

नारी के प्रति संकीर्ण दृष्टि और समाज के उपेक्षाभाव का विरोध करते हुए कवि ने लिखा हैः

''योनि मात्र रह गई मानवी
निज आत्मा कर अर्पण
पुरूष प्रकृति की पशुता का
पहने नैतिक आभूषण
नष्ट हो गई उसकी आत्मा
त्वचा रह गई पावन
युग–युग से अवगुंठित बंधन।
खोलो हे मेखला युगों की
कटि प्रदेश से तन से।''[7]

नारी मुक्ति की आकांक्षा से भरे पंत जी के ये शब्द समाज में उसकी स्थिति के कटु यथार्थ को उद्‌घाटित करते है। 'ग्राम्या' में नारी–स्वाधीनता को लेकर पंतजी ने कई रचनाएँ लिखी है। 'ग्राम युवती', 'ग्राम नारी', 'ग्राम वधू', 'स्त्री', 'मजदूरनी के प्रति'। 'नारी' आदि कविताएँ नारी जागरण के भावों से ओत–प्रोत हैं। इन कविताओं में पंत ने नारी के श्रमशील व्यक्तित्व, अंध विश्वासों और बंधनों की जकड़न, परिस्थितियों की मार से असमय वृद्ध हो जाने वाले सौन्दर्य आदि के जो भावपूर्ण चित्र प्रस्तुत किये है वे भारतीय नारी की समाज में स्थितियों के यथार्थ का उद्‌घाटन करते हैं। 'ग्राम युवती' कविता में पंत ने इठलाती हुई सौन्दर्य की मूर्ति ग्रामीण युवती के जीवन सौन्दर्य का वर्णन किया है तो साथ ही अभावमय जीवन और कमरतोड़ श्रम से उसकी मनोहर मूर्ति असमय ही असुन्दरता की शिकार हो जाती है। इस ओर संकेत करते हुए लिखा हैः

''जर्जर हो जाता उसका तन!
ढह जाता असमय यौवन धन!
बह जाता तट का तिनका!
जो लहरों से हँस खेला कुछ क्षण!!''[8]

इसी प्रकार 'मजदूरनी के प्रति' कविता में कवि ने मजदूरनी के श्रमशील व्यक्तित्व के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया है तो 'नारी' में समाज की क्रूरता की शिकार स्त्री की वेदना को भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान की हैः

''हाय। मानवी रही न नारी लज्जा से अवगुंठित।
वह नर की लालस प्रतिमा। शोभा सज्जा से निर्मित!
युग–युग की बंदिनी। देह की कारा में निज सीमित
वह अदृश्य विश्व की। गृह पशु सी ही जीवित!''[9]

निराला और पंत के काव्य के समान नारी–मुक्ति की आकांक्षाओं से भरा महादेवी जी का काव्य अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। समाज में नारी की विडम्बनाओं को रेखांकित करते हुए अपने काव्य में नारी के स्वातंत्र्य–भाव, दर्प, हठ और एकाकी जीवन को अनुभव की कसौटी पर प्रस्तुत किया है। अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली में महादेवी जी के काव्य में वर्णित नारी की स्वाधीन चेतना सामंती बंधनों से मुक्ति का ही प्रयास है जिसमें आधुनिक जनतंत्रात्मक विचारों की स्पष्ट झलक हैः

''पर शेष नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा।
तुम में ढूँढूँगी पीड़ा।''[10]

इस प्रकार के भावपूर्ण गीतों में कवयित्री ने नारी की विवशता और दुःखभरी जिन्दगी को ही प्रस्तुत किया है। 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' गीत में महादेवी जी ने जिस वेदना को उजागर किया है वह समाज में नारी की यथार्थ

स्थिति का अत्यधिक सच्चा चित्र है:

''विस्तृत नभ का कोई कोना।
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!''[11]

इस प्रकार छायावादी कवियों में महादेवी जी के काव्य में नारी के जीवंत मानवी–रूप को अभिव्यक्ति मिली है जो तद्युगीन बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा से ही अधिक प्रेरित है।

महादेवी का काव्य निजता, स्वतंत्रता और अपनी वैयक्तिक इच्छा–आकांक्षाओं के प्रति मोह की अभिव्यक्ति से भरपूर होने के कारण विशिष्ट पहचान रखता है। सामंती बंधनों से बँधी एक नारी के स्वातंत्र्य–बोध में जो पीड़ा और वेदना हो सकती है महादेवी जी का काव्य उसकी जीवंत अभिव्यक्ति है। उनके काव्य में बिना किसी हिचक के अपने जीवन के दुःख और कष्टों को साहसपूर्वक झेलने का संकल्प और आत्म–स्वाभिमान का भाव ही अधिक मुखरित हुआ है। कवयित्री ने अपने जीवन को स्वतंत्रतापूर्वक जीने का संकल्प बार–बार दोहराया है। सामंती समाज के परम्परागत नारी विषयक दृष्टिकोण, बंधनों, सौन्दर्य के मानदण्डों और झूठे नैतिक मूल्यों का विरोध करते हुए वे कहती हैं:

''बाँध लेंगे क्या मुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन।
क्या डूबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस गीले?
तू न अपनी छाँह अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!''[12]

महादेवी जी के काव्य में सामाजिक बंधनों को तोड़कर अपना स्वतंत्र रास्ता चुनने का जो भाव बार–बार उभर कर सामने आता है उसमें तद्युगीन नारी–स्वातंत्र्य और जागरण का भाव ही प्रमुख है। महादेवी जी का काव्य प्रेम और विरह की पीड़ा को लेकर चर्चित रहा है लेकिन उसमें आधुनिक नारी की स्वतंत्रता की भावनाओं को ही अभिव्यक्ति मिली है। अपने चिर–परिचित प्रियतम को सम्बोधित करके लिखे गए महादेवी जी के प्रेम–गीतों में जिस पीड़ा और सौन्दर्यवृत्ति के दर्शन होते है उसमें किसी आध्यात्मिक जगत् के मूल्यों का चित्रण नही है, बल्कि इसी जगत् की नारी के दुःख–दर्द से उत्पन्न भावों का कलात्मक प्रस्तुतीकरण है। महादेवी जी के काव्य में आधुनिक नारी की विवशता, तड़फन और बंधनों से मुक्ति के ही भाव प्रमुख हैं। कवयित्री की व्यक्ति स्वातंत्र्य की कामना और अपने प्रेम की वास्तविकता का आधार सामाजिक है जिसको उसके आँसू बताते हैं:

''कैसे कहती हो सपना है
अलि। उस मिलन की बात
भरे हुए अब तक फूलों में
मेरे आँसू, उनके हास।''[13]

सामाजिक जीवन में हर कदम पर बंधनों में जकड़ी 'नीर भरी बदली' के समान कष्ट उठाने वाली एवं अपनी पीड़ा को झेलने वाली यह नारी किसी अन्य लोक की देवी नहीं, बल्कि इसी लोक की जीती–जागती मानवी है जिसके मानवीय रूप को कवियित्री ने अपने गीतों में अभिव्यक्ति दी है:

''रज–कण पर जल कण हो बरसी
नवजीवन अंकुर बन निकली!''[14]

इस प्रकार महादेवी जी के काव्य में नारी के त्याग और आत्मबलिदान का चित्रण उसके भावुक पक्ष की अपेक्षा कहीं अधिक सामाजिक अर्थवत्ता रखता है। 'प्रेयसी' कविता में निराला ने नारी के प्रेयसी रूप का चित्रण किया है। अपने प्रेम की सच्चाई के कारण प्रेयसी के हृदय में समाज के जातीय बंधनों के विरूद्ध विद्रोह की भावना है। यह

विद्रोह समाज के सामंती मूल्यों और बंधनों के विरूद्ध सहज मानवीय सम्बन्धों की दृढ़ता को उजागर करता है।

"दोनो हम भिन्न वर्ण।
भिन्न जाति। भिन्न रूप।
भिन्न धर्मभाव पर
केवल अपनाव से प्राणों से एक थे।"[15]

रीतिकालीन संकुचित काव्य दृष्टि और ओढ़ी हुई नैतिकता में बंधे प्रेम, सौन्दर्य और नारी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को छायावादी कवियों ने चुनौती दी और इन्हें सामाजिक जीवन के अनिवार्य मनोभावों के रूप में प्रस्तुत किया। नारी को भोग–विलास की सामग्री मानने वाली मनोवृत्ति से ऊपर उठकर छायावादी कवियों ने उसके सहज सौन्दर्य का चित्रण करके मानवीय रूप को उद्घाटित किया और पुरूष के समकक्ष दर्जा दिया। सम्पूर्ण छायावादी काव्य स्त्री स्वाधीनता का पक्षधर रहा है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि छायावादी कविता में नारी को जो महत्त्व प्राप्त हुआ है व पहले की अपेक्षा कहीं अधिक गौरवशाली है। नारी को जो महिमा प्रदान की वह स्तुत्य है। उसकी स्वतंत्रता पर बल देकर श्रद्धामयी करूणामयी,कल्याणी, कलामयी तथा प्रेममयी जीवन–सहचरी रूप का चित्रण करके छायावादी कवियों ने समाज और साहित्य को अभिनव जीवन–रस से सींच दिया। कवि के शब्दों में:

अकेली सुन्दरता कल्याणि
सकल ऐश्वर्यों की संधान।
देवि! माँ! सहचरि! प्राण!

fu"d"k

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि छायावादी काव्य में नारी स्वाधीनता के स्वर जिस प्रमुखता से स्थान पाए वह तात्कालिक राष्ट्रीय जागरण का प्रभाव ही था। द्विवेदी युग जिस नारी को बाधा माने पथिक बन बैठा था, छायावाद में वही नारी अपना स्थान बनाने में सफल रही और इसके पीछे नारी शिक्षा का अमूल्य योगदान है।

lUnHkZ lwph

1. सिंह नामवर, *छायावाद,* पृ.– 71।
2. निराला, *रचनावली,* भाग–6 पृ. 361।
3. निराला, *परिमल,* पृ. 98।
4. निराला, *रचनावली,* भाग–1, पृ. 323।
5. पंत, *पल्लव,* पृ. 101।
6. पंत, *युगवाणी* पृ. 58।
7. पंत, *युगवाणी,* पृ. 58–59।
8. पंत, *ग्राम्या,* पृ. 19।
9. पंत, *ग्राम्या* पृ. 85।
10. वर्मा महादेवी, *संधिनी,* पृ. 41।
11. वर्मा महादेवी, संधिनी, पृ. 108।
12. वर्मा महादेवी, *संधिनी,* पृ. 111।
13. वर्मा महादेवी, *संधिनी,* पृ. 75।
14. वर्मा महादेवी, *संधिनी,* पृ. 108।
15. निराला, *रचनावली,* पृ. 309।

****